ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 261-263**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

राग भैरव के स्वरूप एवं गायन शैली का अध्ययन

विजय प्रकाश पाण्डेय
गेस्ट फैकल्टी मेंबर, संगीत (गायन), जननायक चंद्रशेखर विश्वविद्यालय– बलिया (उ0प्र) भारत

Received-16.08.2026, Revised-24.08.2026, Accepted-01.09.2026, **E-mail:Vijayprakashpandeyvicky@gmail.com**

सारांशः *भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग केवल स्वरों का क्रम नहीं, बल्कि स्वर, लय, भाव, समय और प्रस्तुति–शैली के समन्वय से निर्मित एक विशिष्ट सांगीतिक व्यक्तित्व है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रमुख और प्राचीन रागों में राग भैरव का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह प्रातःकालीन राग है और अपनी गंभीरता, आध्यात्मिकता, शांत भाव तथा गरिमापूर्ण स्वर–विन्यास के कारण भारतीय संगीत की परम्परा में विशिष्ट पहचान रखता है। राग भैरव का संबंध भैरव थाट से माना जाता है और इसके स्वर–समूह में कोमल ऋषभ तथा कोमल धैवत का प्रयोग होता है, जबकि शेष स्वर शुद्ध होते हैं। इसकी विशेषता केवल कोमल स्वरों के प्रयोग में नहीं, बल्कि कोमल ऋषभ और कोमल धैवत के विशिष्ट आंदोलन में निहित है। यही आंदोलन राग भैरव के गंभीर और प्रभावशाली व्यक्तित्व को निर्मित करता है।*

राग भैरव का आरोह सामान्यतः– सा रे (कोमल) ग म प ध(कोमल) नि सां तथा अवरोह– सां नि ध(कोमल) प म ग रे(कोमल) सा माना जाता है। इसके वादी–संवादी स्वर संबंधी विभिन्न परम्पराओं में कुछ मतभेद मिलते हैं, फिर भी 'धैवत' और 'ऋषभ' को प्रमुख स्वर–क्षेत्र से जोड़कर देखा जाता है। राग की पकड़ में 'सा रे (कोमल) ग म, प, ध (कोमल) नि ध (कोमल) प, म ग रे(कोमल) सा' जैसे स्वर–संयोजन इसकी प्रकृति को प्रकट करते हैं। राग भैरव का गायन प्रातःकाल, विशेषकर सूर्योदय के आसपास, अत्यंत प्रभावी माना जाता है।

इस राग की गायन शैली में विलंबित आलाप, मंद्र एवं मध्य सप्तक का विस्तार, आंदोलित कोमल ऋषभ और धैवत, मींड, गमक तथा स्वर–लगाव की विशेष भूमिका होती है। ध्रुपद, धमार, खयाल तथा भजन जैसी विभिन्न गायन परम्पराओं में भैरव का प्रयोग मिलता है। ध्रुपद में इसकी गंभीरता और आध्यात्मिकता अधिक मुखर होती है, जबकि खयाल में कलाकार आलाप, बोल–आलाप, तान तथा विभिन्न लयकारियों के माध्यम से राग के स्वरूप का विस्तार करता है। आधुनिक समय में भी राग भैरव संगीत शिक्षा, मंचीय प्रस्तुति, भक्ति–संगीत तथा रचनात्मक संगीत में अत्यंत लोकप्रिय है।

यह लेख राग भैरव के ऐतिहासिक एवं सैद्धांतिक स्वरूप, स्वरसंगठन, जाति, वादी–संवादी, पकड़, समय, रस, प्रमुख गायन शैलियों और इसके सांगीतिक महत्व का अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मूल निष्कर्ष यह है कि राग भैरव की शक्ति उसके सरल स्वर–संगठन से अधिक उसके विशिष्ट स्वर–व्यवहार में निहित है। कोमल ऋषभ और धैवत का आंदोलन, गंभीर स्वर–लगाव तथा प्रातःकालीन वातावरण मिलकर इसे हिन्दुस्तानी संगीत के अत्यंत प्रभावशाली रागों में स्थापित करते हैं।

कुंजीभूत शब्द– राग भैरव, भैरव थाट, कोमल ऋषभ, कोमल धैवत, प्रातः कालीन राग, खयाल, ध्रुपद, आलाप, गायन शैली, हिन्दुस्तानी।

प्रस्तावना– भारतीय शास्त्रीय संगीत की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में राग–पद्धति का स्थान सर्वोपरि है। राग भारतीय संगीत की वह सांगीतिक अवधारणा है, जो निश्चित स्वरों के माध्यम से किसी विशिष्ट भाव, वातावरण और सौंदर्य का निर्माण करती है। भारतीय संगीत में प्रत्येक राग की अपनी प्रकृति, स्वर–संगति, चलन, समय, भाव और प्रस्तुति की शैली होती है। इसी कारण राग को केवल आरोह–अवरोह के आधार पर समझना पर्याप्त नहीं माना जाता। राग का वास्तविक स्वरूप उसके स्वर–प्रयोग, स्वर–लगाव, विशिष्ट वाक्यांश, न्यास, अलंकार तथा गायन की परम्परा से निर्धारित होता है।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रमुख रागों में भैरव अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसे प्रातःकालीन रागों में प्रमुख स्थान प्राप्त है। प्रातःकाल जब रात्रि का अंधकार समाप्त होकर प्रकृति में प्रकाश का आरंभ होता है, उस समय की गंभीर, शांत और आध्यात्मिक अनुभूति को राग भैरव प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करता है। यही कारण है कि परम्परागत संगीत–शिक्षा में राग भैरव को आरंभिक और आधारभूत रागों में भी महत्वपूर्ण माना जाता है।

भैरव नाम का संबंध भारतीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्परा में भगवान शिव के भैरव स्वरूप से जोड़ा जाता है। संगीतशास्त्रीय परम्परा में भी इस राग का व्यक्तित्व गंभीर, ओजपूर्ण तथा आध्यात्मिक माना गया है। राग भैरव से अनेक अन्य रागों के नाम और स्वरूप विकसित हुए हैं, जैसे अहिर भैरव, आनंद भैरव, नट भैरव, जोगिया भैरव आदि। इससे भी इसकी व्यापक सांगीतिक प्रभावशीलता का अनुमान लगाया जा सकता है।

राग भैरव के स्वरूप की सबसे विशिष्ट विशेषता इसके कोमल ऋषभ और कोमल धैवत का प्रयोग है। दोनों स्वरों को साधारण रूप से गाने के बजाय आंदोलित करके प्रस्तुत किया जाता है।

इस आंदोलन में स्वर अपने आसपास के स्वर–क्षेत्र से जुड़कर एक विशिष्ट भाव उत्पन्न करता है। यदि इन स्वरों को सीधे और सपाट रूप में प्रस्तुत किया जाए तो राग की मूल प्रकृति कमजोर पड़ सकती है। इसलिए भैरव के अध्ययन में केवल स्वर–सिद्धांत नहीं, बल्कि स्वर–व्यवहार का अध्ययन भी अनिवार्य है।

राग भैरव ध्रुपद और खयाल दोनों परम्पराओं में महत्वपूर्ण रहा है। ध्रुपद में इसकी गंभीरता, स्थिरता और आध्यात्मिक स्वरूप विशेष रूप से उभरकर सामने आता है। खयाल गायन में कलाकार इसकी बंदिश के आधार पर आलाप, बोल–आलाप और तानों के माध्यम से राग का विस्तार करता है। भजन और अन्य अर्धशास्त्रीय अथवा भक्तिपरक प्रस्तुतियों में भी भैरव के स्वर–स्वभाव का प्रभाव दिखाई देता है।

विश्लेषण– राग भैरव का सैद्धांतिक स्वरूप समझने के लिए इसके स्वरों और उनके व्यवहार का अध्ययन आवश्यक है। वर्तमान हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में इसे भैरव थाट का आश्रय राग माना जाता है। भैरव थाट में ऋषभ और धैवत कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध होते हैं। राग भैरव में भी यही स्वर–संरचना मुख्य आधार प्रदान करती है।

राग भैरव के सातों स्वर प्रयुक्त होते हैं, इसलिए इसकी जाति सम्पूर्ण–सम्पूर्ण मानी जाती है। इसके स्वर हैं। षड्ज, कोमल ऋषभ, शुद्ध गांधार, शुद्ध मध्यम, पंचम, कोमल धैवत और शुद्ध निषाद। तार सप्तक का षड्ज भी प्रयोग में आता है। सामान्य स्वरूप इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

आरोहः सा रे (कोमल) ग म प ध (कोमल) नि सां
अवरोहः सां नि ध (कोमल) प म ग रे (कोमल) सा

लेकिन केवल यह आरोह–अवरोह राग भैरव का पूर्ण परिचय नहीं देता। राग की वास्तविक पहचान उसके विशिष्ट चलन में होती है। उदाहरण के लिए कोमल ऋषभ और कोमल धैवत को आंदोलित करने की परम्परा इसकी प्रमुख पहचान है। 'रे' और 'ध' का आंदोलन राग को गंभीरता और गाम्भीर्य प्रदान करता है।

राग की पकड़ या प्रमुख स्वर–वाक्यांश को इस प्रकार समझा जा सकता है।
सा, रे (कोमल) ग म, प, ध (कोमल) नि ध (कोमल) प, म ग, रे (कोमल) सा।

यहाँ कोमल ऋषभ तथा कोमल धैवत का स्वर–व्यवहार विशेष ध्यान देने योग्य है। कलाकार इन स्वरों को अत्यधिक सावधानी से ग्रहण करता है। राग की पहचान इन स्वरों की सही ऊँचाई और आंदोलन पर निर्भर करती है।

राग भैरव में कोमल ऋषभ अत्यंत प्रभावशाली स्वर है। इसे केवल कोमल स्वर के रूप में गाना पर्याप्त नहीं है। इसके स्वर–लगाव में एक प्रकार की गहराई और आंदोलन होना चाहिए। इसी प्रकार कोमल धैवत भी आंदोलित होकर राग के भाव को सुदृढ़ करता है। इन दोनों स्वरों के आंदोलन के कारण राग में गंभीरता और आध्यात्मिकता आती है।

वादी–संवादी संबंध के विषय में विभिन्न संगीतशास्त्रीय परम्पराओं में कुछ मतभेद मिलते हैं। अनेक आधुनिक संगीतशास्त्रीय स्रोत भैरव में धैवत को वादी और ऋषभ को संवादी मानते हैं, जबकि कुछ परम्पराएँ अन्य स्वर–संबंधों को भी महत्व देती हैं। इसलिए व्यावहारिक अध्ययन में केवल वादी–संवादी की संकल्पना के बजाय राग के प्रमुख स्वर–क्षेत्र और स्वर–व्यवहार को अधिक महत्व देना उपयोगी है।

राग भैरव का गायन–समय प्रातःकाल माना गया है। समय–सिद्धांत के अनुसार यह दिन के प्रथम प्रहर का राग है। सामान्यतः सूर्योदय के आसपास इसके गायन को उपयुक्त माना जाता है। भारतीय संगीत में समय और राग के संबंध की परम्परा के अनुसार प्रत्येक राग की एक विशेष भावात्मक स्थिति होती है। भैरव का गंभीर स्वरूप प्रातःकालीन वातावरण के साथ स्वाभाविक रूप से जुड़ता है। राग भैरव के भाव–पक्ष की बात करें तो इसमें शांत, गंभीर, भक्ति और आध्यात्मिक भाव की प्रधानता दिखाई देती है। इसकी प्रस्तुति में अत्यधिक चंचलता या हल्कापन राग की मूल प्रकृति के अनुरूप नहीं माना जाता। जब कलाकार मंद्र सप्तक से धीरे–धीरे स्वर विस्तार करता है और कोमल ऋषभ तथा धैवत को आंदोलित करता है, तब राग की गंभीरता स्पष्ट रूप से अनुभव होती है।

राग भैरव में आलाप की भूमिका– राग भैरव की गायन शैली में आलाप का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। आलाप के माध्यम से कलाकार बिना लय या निश्चित ताल के राग के स्वरूप को धीरे–धीरे विकसित करता है। प्रारंभ में मंद्र षड्ज और उसके आसपास के स्वरों से राग का वातावरण निर्मित किया जा सकता है।

इसके बाद कोमल ऋषभ का गंभीर आंदोलन, गांधार और मध्यम का विकास तथा पंचम की स्थापना की जाती है। विलंबित गति में आलाप करते समय स्वर–लगाव की शुद्धता अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। भैरव के कोमल स्वरों को यदि पर्याप्त आंदोलन के बिना प्रस्तुत किया जाए तो राग की विशिष्टता कम हो सकती है। इसलिए गुरु–शिष्य परम्परा में इस राग के अभ्यास के दौरान स्वर–साधना पर विशेष जोर दिया जाता है।

खयाल गायन में राग भैरव– खयाल शैली में राग भैरव की प्रस्तुति अत्यंत समृद्ध रूप में की जाती है। सामान्यतः विलंबित खयाल से शुरुआत करके राग का क्रमिक विकास किया जाता है। विलंबित बंदिश में कलाकार लंबे स्वर, मींड, आलाप और बोल–आलाप के माध्यम से राग की गंभीरता को उभारता है। इसके बाद द्रुत खयाल में लय का विस्तार करते हुए तान, बोलतान तथा अन्य लयात्मक प्रयोग किए जाते हैं।

भैरव की तानें अन्य अपेक्षाकृत चंचल रागों की तुलना में अधिक गंभीर और स्वरप्रधान हो सकती हैं। सपाट तानों के साथ–साथ मींडयुक्त और गमकयुक्त तानों का भी प्रयोग किया जाता है। किंतु तानों में राग की मूल पहचान बनाए रखना आवश्यक है। विशेषतः कोमल ऋषभ और धैवत के उचित आंदोलन के बिना अत्यधिक तेज तानें राग के स्वरूप को कमजोर कर सकती हैं।

ध्रुपद में राग भैरव– ध्रुपद परम्परा में राग भैरव का स्वरूप अत्यंत प्रभावशाली दिखाई देता है। ध्रुपद की गंभीर, स्थिर और आध्यात्मिक गायकी भैरव की प्रकृति के साथ स्वाभाविक रूप से मेल खाती है। ध्रुपद आलाप में मंद्र से तार तक स्वर–विस्तार क्रमिक रूप से किया जाता है। नोम–तोम आलाप के माध्यम से राग का भावात्मक एवं स्वरात्मक विस्तार होता है। ध्रुपद शैली में गमक का प्रयोग भी महत्वपूर्ण है। भैरव के आंदोलित ऋषभ और धैवत को गमक तथा गंभीर स्वर–उच्चारण के साथ प्रस्तुत करने पर राग की प्रभावशीलता और बढ़ जाती है। ध्रुपद में पखावज की संगति राग की गंभीरता को और सुदृढ़ करती है।

भक्ति–संगीत में भैरव– राग भैरव की आध्यात्मिक प्रकृति के कारण इसका प्रयोग भक्तिपरक संगीत में भी व्यापक रूप से हुआ है। भक्ति–रचनाओं में इसके स्वर शांत और गंभीर वातावरण का निर्माण करते हैं। भगवान शिव, देवी अथवा अन्य आध्यात्मिक विषयों पर आधारित रचनाओं में भैरव के स्वर विशेष प्रभाव उत्पन्न करते हैं। भजन में शास्त्रीय राग की कठोर संरचना की अपेक्षा भाव और सरलता को अधिक महत्व दिया जाता है, फिर भी अच्छे भैरव–आधारित भजन में कोमल ऋषभ और धैवत का स्वरूप इसकी पहचान बनाए रखता है।

राग भैरव में अलंकारों का प्रयोग– भैरव गायन में मींड, आंदोलन, गमक, कण स्वर और स्वर–लगाव का विशेष महत्व है। इनमें आंदोलन सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। कोमल ऋषभ और कोमल धैवत के आंदोलन के कारण राग की विशिष्ट ध्वनि निर्मित होती है। मींड के माध्यम से एक स्वर से दूसरे स्वर तक सहज संक्रमण किया जाता है। भैरव में मींड का प्रयोग राग की गंभीरता बनाए रखते हुए किया जाता है। गमक का प्रयोग विशेषतः ध्रुपद तथा गंभीर खयाल गायन में प्रभावी होता है।

राग भैरव और संबंधित राग– भैरव की मूल स्वर–संरचना और नाम से अनेक राग जुड़े हुए हैं। अहिर भैरव इसका प्रसिद्ध उदाहरण है। अहिर भैरव में भैरव के साथ अन्य स्वर–संयोजन का प्रभाव दिखाई देता है और इसका भाव भी अपेक्षाकृत मधुर एवं करुण होता है। नट भैरव में भैरव और नट से संबंधित स्वर–व्यवहार का प्रभाव मिलता है। आनंद भैरव, जोगिया भैरव आदि नाम भी भैरव की व्यापक सांगीतिक परम्परा को दर्शाते हैं।

इन रागों का अध्ययन करने से यह समझने में सहायता मिलती है कि भारतीय संगीत में एक मूल राग के स्वर–व्यवहार से अनेक नए रागात्मक व्यक्तित्व कैसे विकसित हो सकते हैं।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

राग भैरव की शिक्षा–पद्धति– संगीत–शिक्षा में राग भैरव को विशेष महत्व दिए जाने का एक कारण इसकी स्पष्ट स्वर–संरचना है। प्रारंभिक विद्यार्थी इसके आरोह–अवरोह और स्वर–क्रम को आसानी से समझ सकता है, किंतु इसके वास्तविक राग–स्वरूप को आत्मसात करने के लिए लंबे अभ्यास की आवश्यकता होती है।

शिक्षक सामान्यतः पहले शुद्ध स्वर और कोमल स्वरों का अंतर समझाते हैं। इसके बाद कोमल ऋषभ और धैवत के आंदोलन का अभ्यास कराया जाता है। फिर छोटे–छोटे स्वर–वाक्यों के माध्यम से राग की पकड़ विकसित की जाती है। अंततः आलाप, बंदिश और तानों के माध्यम से विद्यार्थी स्वतंत्र प्रस्तुति की ओर बढ़ता है। राग भैरव इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है कि यह विद्यार्थी को 'स्वर सही लगाना' और 'राग के अनुसार स्वर लगाना'कृइन दोनों के बीच का अंतर समझाता है। केवल सही पिच पर कोमल ऋषभ लगाना पर्याप्त नहीं है; उसे भैरव की प्रकृति के अनुरूप आंदोलित और भावपूर्ण बनाना भी आवश्यक है।

महत्व– राग भैरव का महत्व भारतीय शास्त्रीय संगीत के विभिन्न स्तरों पर देखा जा सकता है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह प्राचीन राग–परम्परा से जुड़ा हुआ राग है। आधुनिक हिन्दुस्तानी संगीत में भैरव थाट की अवधारणा के कारण भी इसका सैद्धांतिक महत्व बहुत अधिक है। संगीत–शिक्षा में भैरव को आधारभूत रागों में शामिल किया जाता है। इसके माध्यम से विद्यार्थी को कोमल स्वर, आंदोलन, स्वर–लगाव, समय–सिद्धांत और राग–विस्तार का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होता है। गायन की दृष्टि से भैरव कलाकार की स्वर–साधना की परीक्षा लेने वाला राग भी है। इसके कोमल ऋषभ और धैवत को सही भाव तथा आंदोलन के साथ प्रस्तुत करना आसान नहीं है। इसलिए इस राग का अच्छा गायन कलाकार की स्वर–संवेदना और रागदारी परम्परा की समझ को प्रदर्शित करता है।

सांस्कृतिक दृष्टि से भैरव भारतीय आध्यात्मिक चेतना से गहराई से जुड़ा हुआ है। प्रातःकालीन वातावरण, मंदिर–परम्परा, भक्ति और गंभीरता के साथ इसका संबंध इसे विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान प्रदान करता है। मंचीय संगीत में भी इसका विशेष स्थान है। प्रातःकालीन संगीत समारोहों में भैरव का गायन श्रोताओं को एक गंभीर और शांत सांगीतिक अनुभव प्रदान करता है। ध्रुपद, खयाल और भक्ति–संगीत के कलाकारों ने इसे अपनी–अपनी शैली में प्रस्तुत करके इसके अनेक रूपों को सामने रखा है।

आधुनिक संगीत में भी भैरव का प्रभाव दिखाई देता है। फिल्म–संगीत, भजन, स्वतंत्र संगीत रचनाओं तथा प्रयोगधर्मी संगीत में भैरव अथवा भैरवांग का प्रयोग किया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि राग भैरव केवल पारंपरिक शास्त्रीय संगीत तक सीमित नहीं है, बल्कि आधुनिक सांगीतिक अभिव्यक्ति में भी इसकी संभावनाएँ मौजूद हैं।

निष्कर्ष– राग भैरव हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली राग–संपदा का प्रतिनिधित्व करता है। इसकी पहचान केवल इसके आरोह–अवरोह अथवा भैरव थाट से नहीं होती, बल्कि इसके विशिष्ट स्वर–व्यवहार से होती है। विशेष रूप से कोमल ऋषभ और कोमल धैवत का आंदोलन इसकी आत्मा है। इन्हीं स्वरों के कारण इसमें गंभीरता, शांति, आध्यात्मिकता और गाम्भीर्य का प्रभाव उत्पन्न होता है।

राग भैरव का प्रातःकालीन समय इसके भावात्मक स्वरूप के साथ गहरे रूप में जुड़ा हुआ है। सूर्योदय के समय प्रकृति में होने वाले परिवर्तन और राग के गंभीर स्वर–प्रवाह के बीच एक स्वाभाविक सामंजस्य अनुभव किया जाता है। ध्रुपद में इसकी गंभीरता और आध्यात्मिकता, जबकि खयाल में इसकी रागात्मक स्वतंत्रता तथा आलाप–तान की संभावनाएँ विशेष रूप से सामने आती हैं। इस राग का अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि भारतीय संगीत में राग की पहचान केवल आरोह–अवरोह से नहीं की जा सकती। स्वर का सही स्थान, उसका आंदोलन, मींड, न्यास, पकड़ और विशिष्ट चलन सभी मिलकर राग का व्यक्तित्व निर्मित करते हैं। इसलिए राग भैरव की वास्तविक समझ के लिए सैद्धांतिक ज्ञान के साथ–साथ निरंतर श्रवण, स्वर–साधना और गुरु–मार्गदर्शन आवश्यक है।

अंततः कहा जा सकता है कि राग भैरव भारतीय शास्त्रीय संगीत की ऐसी अमूल्य परम्परा है जिसमें शास्त्रीय अनुशासन और आध्यात्मिक अनुभूति का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। यह राग भारतीय संगीत की प्राचीनता, वैज्ञानिकता और भाव–संपन्नता का प्रतिनिधि है। वर्तमान समय में भी इसकी प्रासंगिकता बनी हुई है और संगीत–शिक्षा, मंचीय प्रस्तुति तथा शोध के क्षेत्र में इसका अध्ययन निरंतर महत्वपूर्ण रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भातखण्डे, विष्णु नारायण – हिन्दुस्तानी संगीत पद्धतिः क्रमिक पुस्तक मालिका, संगीत कार्यालय, हाथरस।
2. पलुस्कर, विष्णु दिगम्बर – संगीत बाल प्रकाश, गांधर्व महाविद्यालय।
3. पटवर्धन, नारायणराव – राग विज्ञान, संगीत गौरव ग्रंथावली।
4. ओंकारनाथ ठाकुर – संगीतांजलि, विभिन्न खंड।
5. शाङ्र्गदेव – संगीत रत्नाकर, विभिन्न हिन्दी टीका एवं संस्करण।
6. भरत मुनि – नाट्यशास्त्र, संगीत एवं नाट्य संबंधी अध्याय।
7. मिश्र, लालमणि – भारतीय संगीत वाद्य, भारती भवन, पटना।
8. देव, बृहस्पति – संगीत चिंतन एवं मनन, संगीत संबंधी शोधपरक ग्रंथ।
9. कुमार, विमल – हिन्दुस्तानी संगीत में राग एवं ताल का स्वरूप, विभिन्न संस्करण।
10. Clayton, Martin- Time in Indian Music: Rhythm, Metre and Form in North Indian Rag Performance, Oxford University Press.
11. Kippen, James- The Tabla of Lucknow: A Cultural Analysis of a Musical Tradition, Cambridge University Press.

*****